लेडीबग गर्ल

डेविड, चित्र: जैकी, हिंदी: विदूषक

“मैं लेडीबग गर्ल हूँ!” लूलू ने किचन में घुसते हुए कहा.

वो अपने भाई के पास वाली कुर्सी पर बैठी.

“क्या तुम्हें पता है - कि लेडीबग्स, कीड़े खाती हैं?”

“हाँ,” उसने कहा.

“यह तो हरेक को पता है.”

नाश्ते के बाद माँ ने कहा,

“पापा और मुझे घर में कुछ काम करना है.
इसलिए तुम्हें अकेले ही खुद को व्यस्त रखो.
ठीक है?”

“मैं भला यह कैसे करूंगी?” लूलू ने पूछा.

“तुम कुछ भी कर सकती हो, लूलू.
क्योंकि तुम लेडीबग गर्ल हो!”

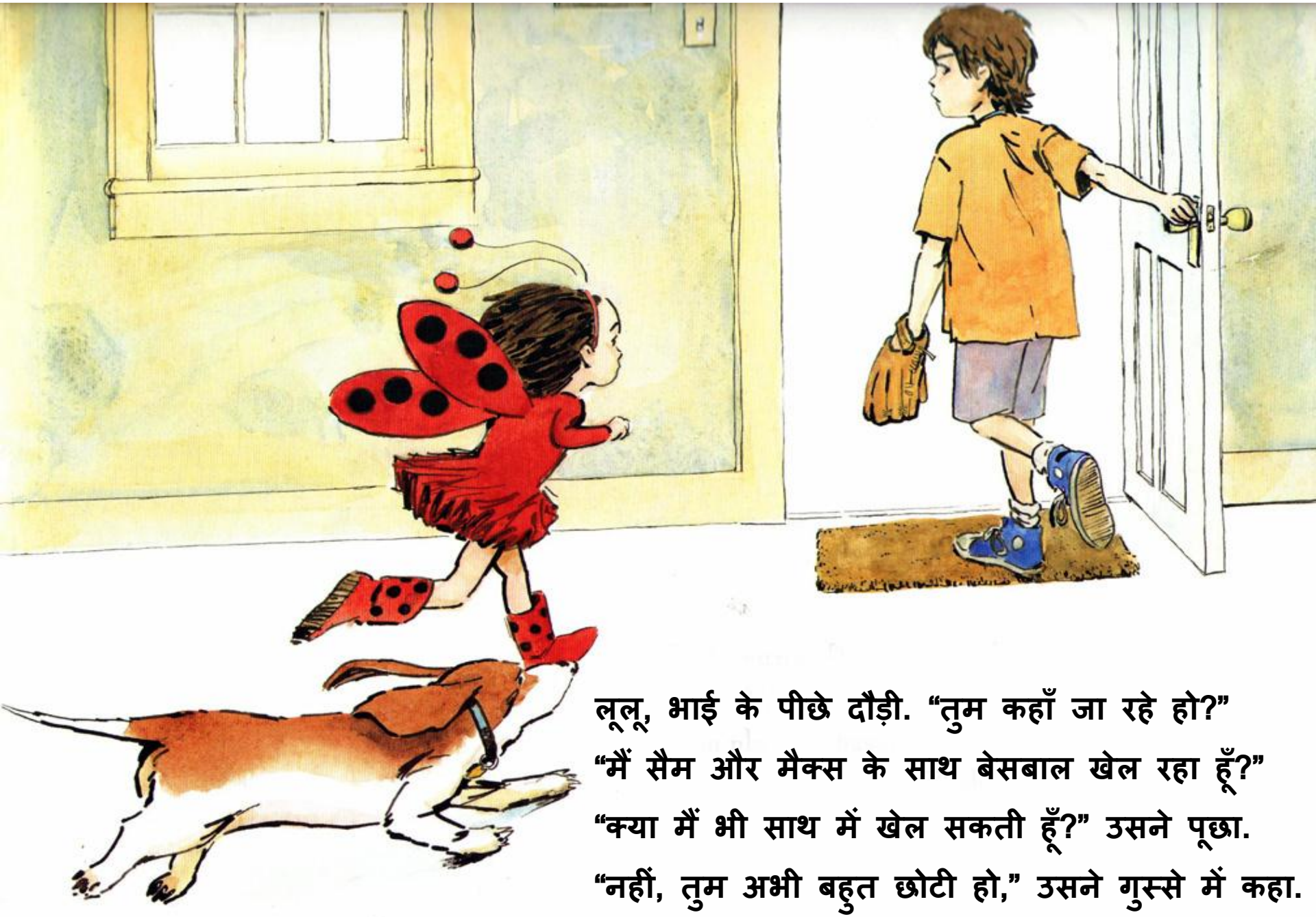

लूलू, भाई के पीछे दौड़ी. “तुम कहाँ जा रहे हो?”

“मैं सैम और मैक्स के साथ बेसबाल खेल रहा हूँ?”

“क्या मैं भी साथ में खेल सकती हूँ?” उसने पूछा.

“नहीं, तुम अभी बहुत छोटी हो,” उसने गुस्से में कहा.

“लेडीबग्स, बेसबाल नहीं खेलती हैं.”

एक लम्बी सांस लेकर, लूलू घर के अन्दर गई.
बिंगो उसके पीछे-पीछे गया.

मैं भला अब क्या करूं!

ड्राइंग रूम में एक दीवार पर बस किताबें ही किताबें थीं.
लूलू अभी पढ़ नहीं सकती थी, पर वो अक्षर तो पहचान सकती थी.
उसे बहुत सारे “L” दिखे – शायद 59 से भी ज्यादा, ऐसा उसे लगा.

फिर उसने अवोकेडो के पौधे में पानी डाला. उसने रूलर से पौधे को नापा - उसका पौधा बढ़ा, या नहीं? कुछ दिनों उसका पौधा बिलकुल नहीं बढ़ता था.
जब बिंगो ने लूलू को घूरा, तो असल में वो बाहर जाने का इशारा था.

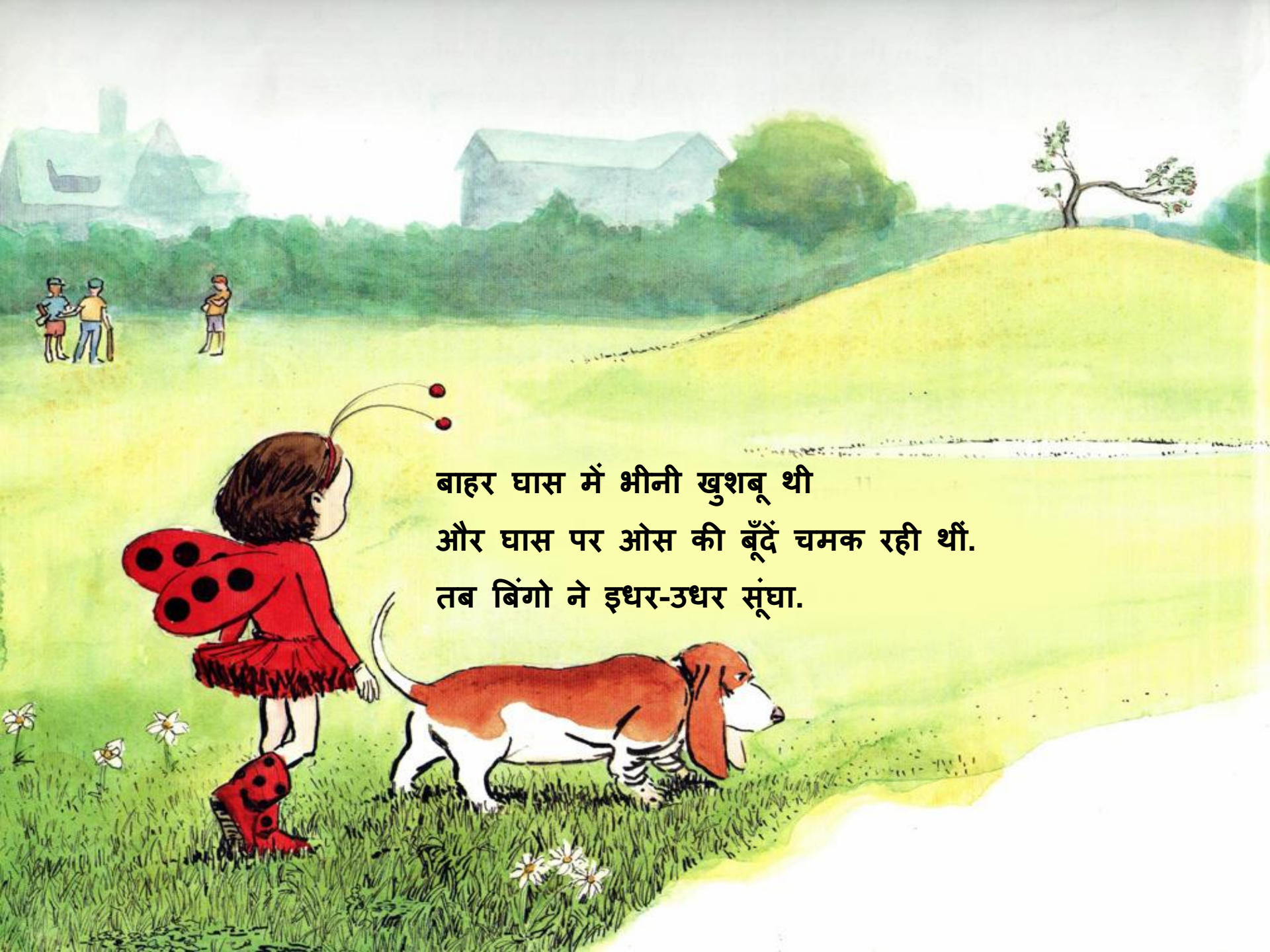

बाहर घास में भीनी खुशबू थी
और घास पर ओस की बूँदें चमक रही थीं.
तब बिंगो ने इधर-उधर सूंघा.

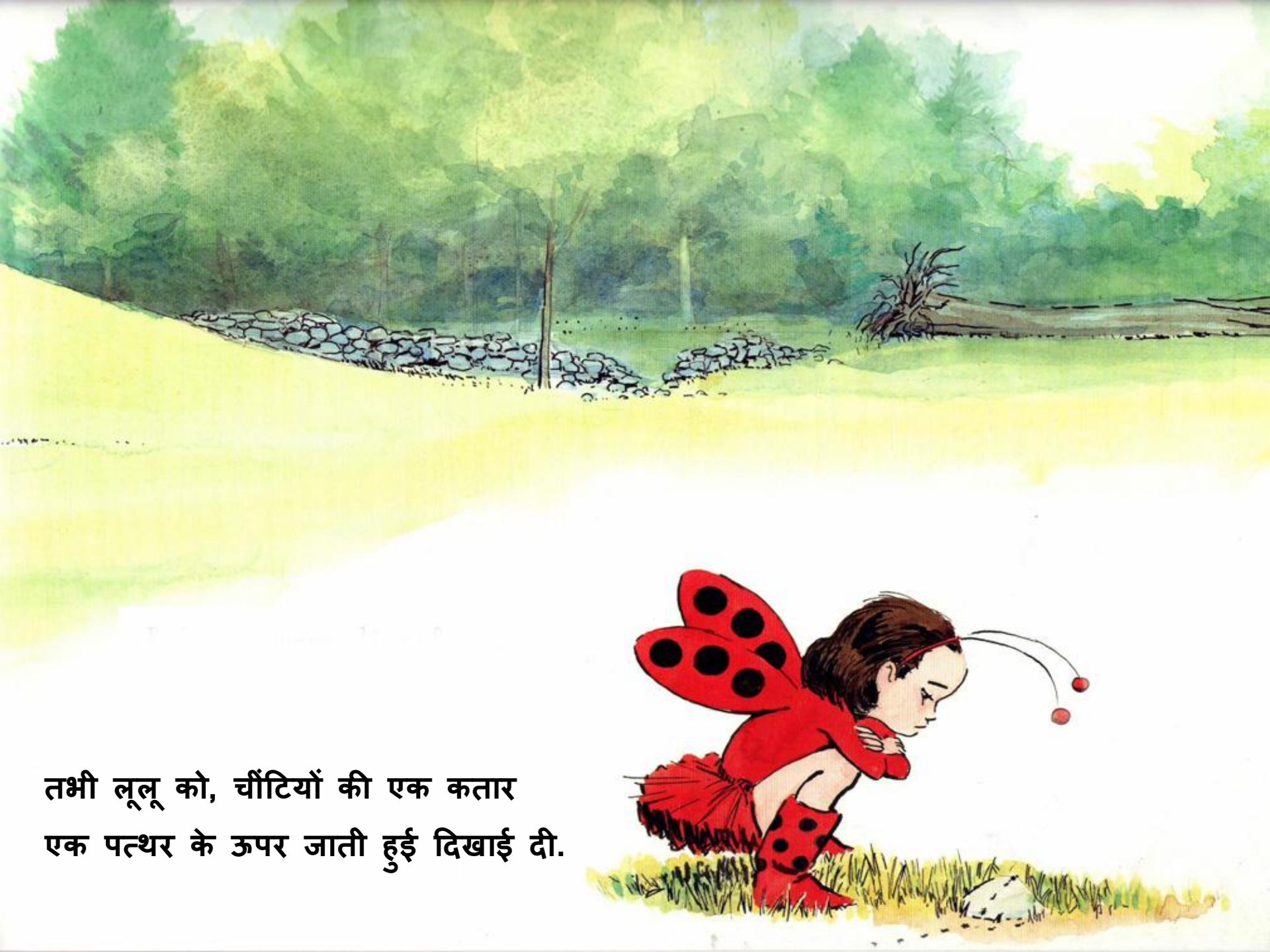

तभी लूलू को, चींटियों की एक कतार
एक पत्थर के ऊपर जाती हुई दिखाई दी.

“क्या वो पत्थर तुम्हारे रास्ते में अड़चन बना है, चीटियों? तुम्हारे लिए उसे सरकाना बहुत कठिन है, क्यों है न?” उसने कहा.

“मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ! क्योंकि मैं लेडीबग गर्ल हूँ!”

फिर लेडीबग गर्ल ने आसानी से उस पत्थर को अपने सिर के ऊपर उठाया और उसे फेंक दिया. अब चींटियों को कोई नहीं रोक सकता था!

“अब चलो, बिंगो!” उसने कहा.
“लेडीबग गर्ल को अभी बहुत काम करना है!”

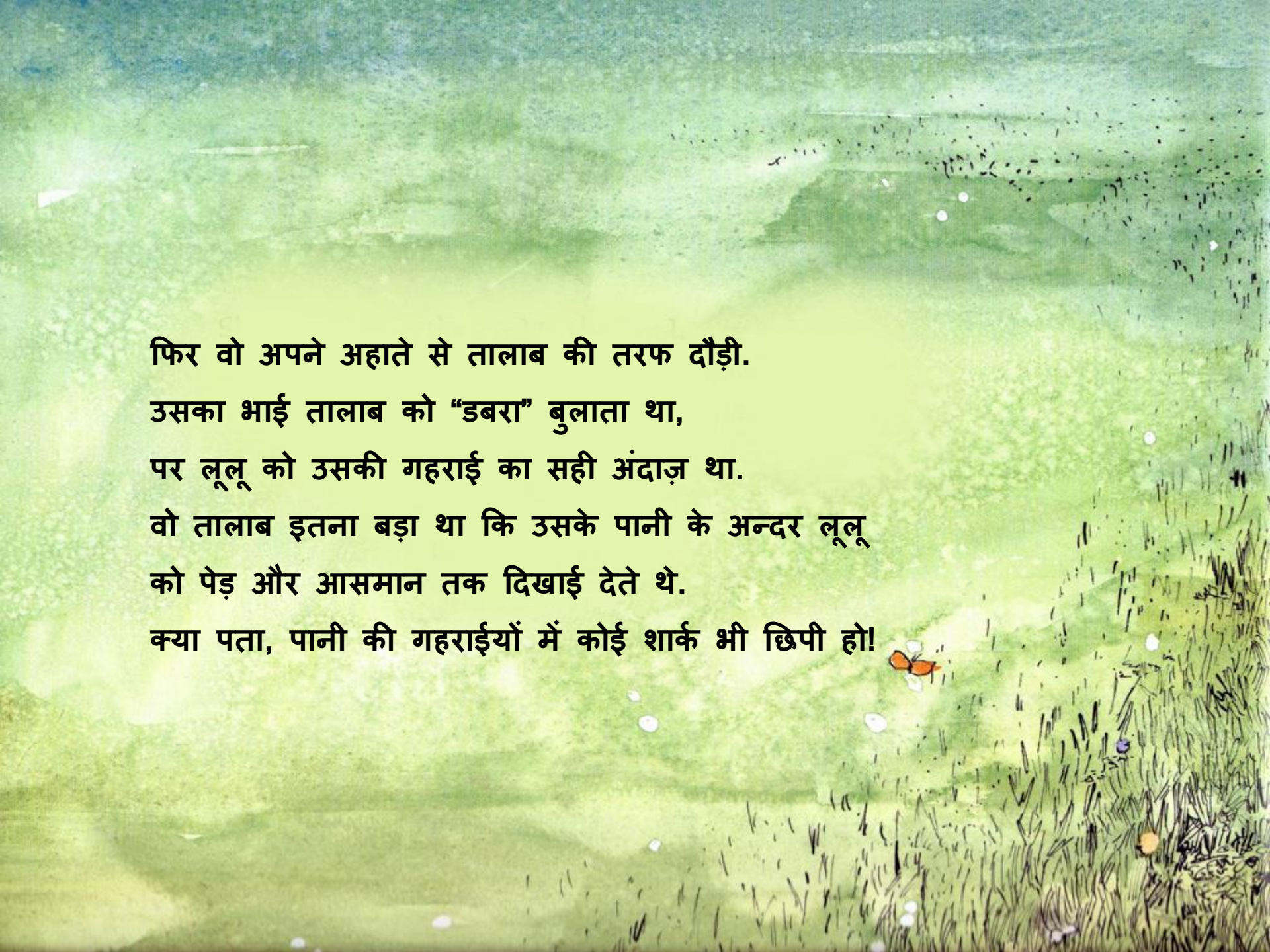

फिर वो अपने अहाते से तालाब की तरफ दौड़ी.
उसका भाई तालाब को “डबरा” बुलाता था,
पर लूलू को उसकी गहराई का सही अंदाज़ था.
वो तालाब इतना बड़ा था कि उसके पानी के अन्दर लूलू
को पेड़ और आसमान तक दिखाई देते थे.
क्या पता, पानी की गहराईयों में कोई शार्क भी छिपी हो!

फिर लेडीबग गर्ल, उसमें कूदी!

उसका अगला पड़ाव, ढहती हुई पत्थर की एक दीवार थी.
दीवार को वाकई में, लूलू की मदद की ज़रुरत थी.
लूलू ने नीचे गिरे हुए पत्थरों को फिर से दीवार के ऊपर रखा.
उससे दीवार पहले से ज्यादा ऊंची और बेहतर बनी.

पत्थर की दीवार से एक बढ़िया किला बनता.

लूलू के आहते के पीछे गिरा हुआ पेड़ भी अब उसे नहीं रोक सकता था! गिरे पेड़ की जड़ें, दिखने में गुस्सैल साँपों जैसी लगती थीं, पर लेडीबग गर्ल ने उनपर कूदते हुए, एक बार भी बिना गिरे, पेड़ के पूरे लम्बे तने को चल कर पार किया.

फिर वो तने से नीचे कूदी,
और नमन करके उसने अपना सिर झुकाया.
“कितना अच्छा है!” उसने कहा.
बिंगो ने अपनी पूँछ हिलाई.

तभी अचानक लूलू को बेसबाल के बैट से गेंद के टकराने की आवाज़ आई. लूलू झट से मुड़ी और उसने गेंद को सीधे अपनी ओर आते हुए देखा.

“सुनो!” लूलू का भाई चिल्लाया. “गेंद को मेरी तरफ वापिस फेंको!”

लूलू ने गेंद को पकड़कर फेंका,

पर न जानें क्यों, गेंद उसके पैर के पास आकर गिरी.

“क्या, अब मैं तुम्हारे साथ खेल सकती हूँ?” लूलू ने अपने दौड़ते हुए भाई से पूछा.
“नहीं,” उसने कहा, “मैंने तुमसे पहले भी कहा था, कि तुम अभी इस खेल के लिए बहुत छोटी हो!”
फिर भाई गेंद को पकड़कर फिर खेलने के लिए वापिस दौड़ा.

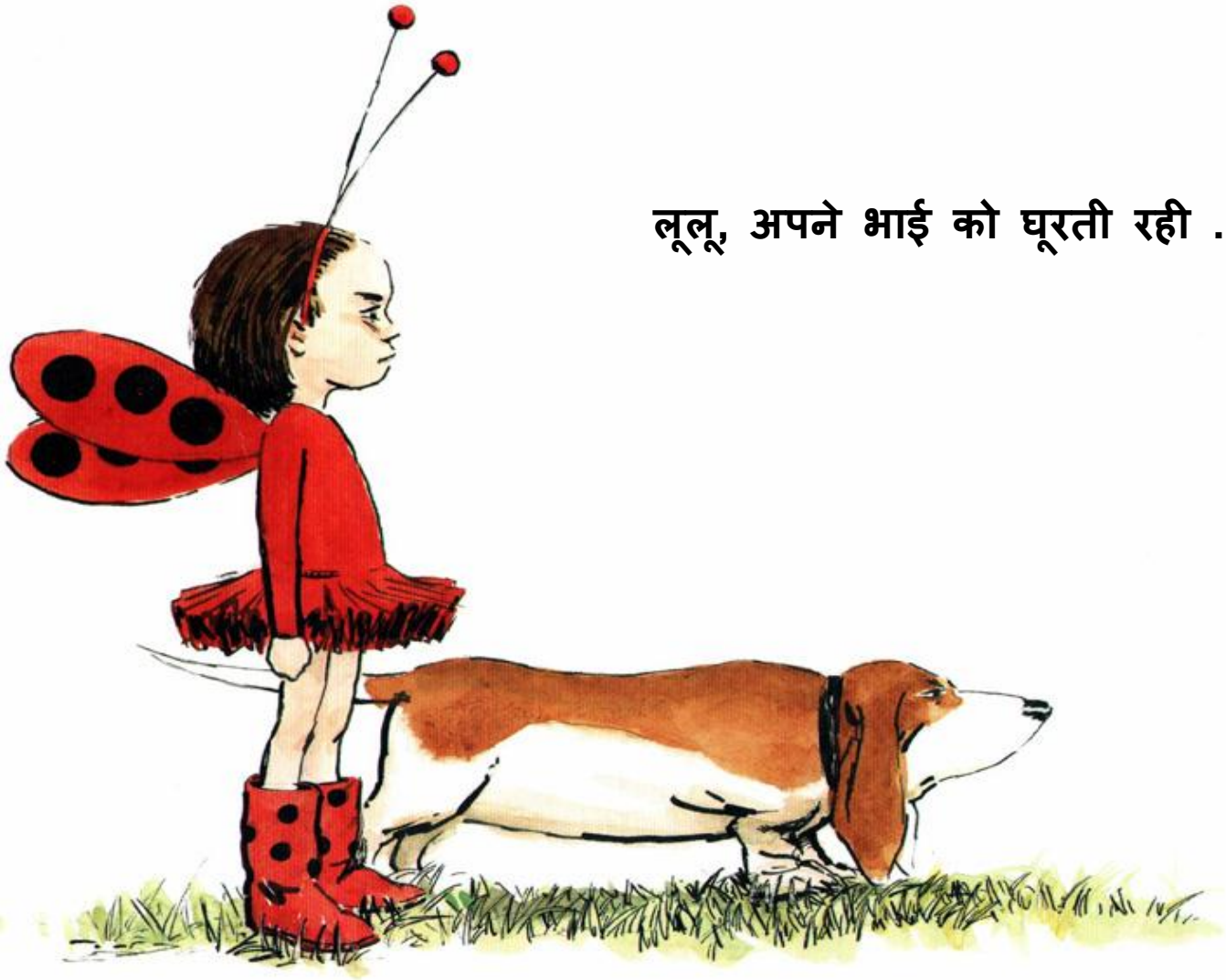

लूलू, अपने भाई को घूरती रही .

फिर लूलू घास पर लेटी. सूरज की तेज़ किरणें उसके गालों पर पड़ीं.

अब उसे पता था कि वो इतनी छोटी नहीं थी.

फिर उसने 59 “L” अक्षरों के बारे में भी सोचा. उसने कितनी बहादुरी से चींटियों को बचाया.

उसे तालाब में शार्क से भी कोई डर नहीं लगा. उसने एक आदर्श किला बनाया.

अंत में उसने पेड़ का पूरा तना, बिना गिरे पार किया.

यह सब कुछ उसने अकेले किया!!

तभी हवा का एक झोंका कुछ सूखी पत्तियां लूलू की ओर बहाकर लाया. लूलू उठकर बैठी और उसने पत्तों का पीछा किया.

लेडीबग गर्ल, ने उड़ते पत्तों को, हवा में पकड़ा!

“लेडीबग गर्ल, अब कोई छोटी-मोटी हस्ती नहीं है!” लूलू हवा में चिल्लाई.

फिर लूलू पहाड़ी पर चढ़कर सेब के पेड़ की टहनी पर बैठी.
वहां से वो अपने भाई और उसके दोस्तों को, बेसबाल खेलते हुए देखती रही.
वो आपस में एक-दूसरे से बहस कर रहे थे.
लूलू की उनके खेल में अब कोई रूचि नहीं बची है.
क्योंकि लेडीबग गर्ल, उनसे कहीं ज्यादा मज़ा कर रही है!

फिर वो अपने हाथ के अंगूठे और तर्जनी ऊँगली को फैलाया और उनके बीच तिरछी नज़र करके देखा.

उसने अपने भाई और उसके सभी दोस्तों को अपनी इन दोनों उँगलियों के बीच में फिट किया.

“मैं छोटी नहीं हूँ,” उसने कहा.

“तुम छोटे हो.”

लूलू कुछ देर के लिए बैठी रही.
वो गौरिय्यों और नीलकंठ के
गीत सुनती रही.

जब उसे माँ के बुलाने की आवाज़ सुनाई दी, तब वो पेड़ से कूदी और उसने कहा,
“अब चलो, बिंगो! हम घर जाकर मम्मी-पापा को सुबह क्या मस्ती की उसके बारे में बताएँगे!”

अब लूलू खुद को बहुत बड़ा महसूस कर रही थी.
वो बिलकुल बाहर के विस्तार जैसी बड़ी थी.
फिर उसने अपने दोनों हाथ फैलाए और पहाड़ी से
उड़ते-उड़ते नीचे उतरी. पीछे-पीछे उसके पंख फड़फड़ाए.